सर्वप्रथम ईरान गये। इसके पश्चात् वहाँ धार्मिक मतभेद उत्पन्न हुआ। अतः एक शाखा भारत की ओर चली गई। भारत के आर्य देव ईरान के आर्य असुर कहलाये। इनमें युद्ध होता रहा है। इसका वर्णन यत्र-तत्र वेदों आदि में है। इसका विरोध भारतीय सिद्धान्त वालों ने किया है।

(ख) आर्यों का आदि-देश "जर्मन प्रदेश" था—पेन्का तथा अन्य जर्मन विद्वानों का मत—

जर्मनी के प्रसिद्ध विद्वान श्री पेन्का तथा अन्य जर्मन विद्वानों का मत है कि आर्यों का आदि-स्थान जर्मन प्रदेश था। उनके अनुसार जर्मन प्रदेश वालों ने सदैव इन्डो-योरोपियन भाषा का प्रयोग किया है और जर्मन प्रदेश का आन्तरिक भाग विशेषकर स्कैन्डेनेविया पर किसी विदेशी जाति ने कभी प्रभुत्व नहीं स्थापित किया। इस प्रकार यही परिणाम निकलता है कि जर्मनी अथवा जर्मनी का कोई प्रदेश ही आर्यों का मूल देश था। पेन्का के विचार में स्कैन्डेनेविया ही आर्यों का आदि देश था। इसका एक और प्रमाण उन्होंने यह दिया है कि कुछ ऐसे ताम्र-पत्र भी पाये गये हैं, जिन पर इन्डोयोरोपीय रेखाचित्र अंकित है। परन्तु इन दोनों बातों का विरोध किया गया है। उनका यह कहना है कि यह समस्या भाषा सम्बन्धी है न कि जाति सम्बन्धी। दूसरे इन्डोयोरोपीय ताम्रपात्र दूसरे स्थानों पर भी पाये गये हैं। अतः यह कहना कि जर्मनी प्रदेश आर्यों का आदि स्थान था, ठीक नहीं है।

(ग) आर्यों का आदि-देश "दक्षिणी रूस" था—पीकार्नो, नेहरिंग

कुछ विद्वानों के विचार में आर्यों का आदि-देश रूस के दक्षिण भाग में स्टेप्स के मैदानों में था। इसका अनुमोदन पोकार्नो तथा नेहरिंग ने किया है। नेहरिंग महोदय ने अनेक ताम्र पत्रों को खोज निकाला है जो ३००० वर्ष पूर्व के हैं। इनके आधार पर उन्होंने यह बताया है कि दक्षिणी रूस आर्यों का आदि देश था। डा० पी० गाइल्स ने इस मत का विरोध किया है। उनका कहना है कि आर्यों ने जिन बातों का वर्णन अपने साहित्य में किया है वे सभी बातें रूस के स्टेप्स के मैदान में नहीं पाई जाती हैं। दूसरे ताम्रपत्र अन्य स्थानों पर भी पाये गये हैं। पोकार्नो ने नेहरिंग के मत का समर्थन किया है।

(२) आर्यों का आदि देश मध्य एशिया था

जर्मन विद्वान मैक्समूलर (Max Muller) ने यह सिद्ध किया है कि आर्यों का आदि देश मध्य एशिया था। इन विद्वानों का कहना है कि आर्य जाति तथा उनकी सभ्यता और संस्कृति का ज्ञान हमें वेदों तथा अवस्ता से होता है। अतः यह सिद्ध होता है कि भारत तथा ईरान के आर्य बहुत दिनों तक साथ-साथ रहे होंगे। इन ग्रन्थों में वर्णित बहुत सी वस्तुओं का मध्य एशिया में पाया जाना यह सिद्ध करता है कि उनका आदि स्थान 'मध्य एशिया' में था। इस सिद्धान्त का समर्थन अनेक अन्य विद्वानों ने किया है।

(क) आर्यों का आदि-देश "पामीर प्रदेश" अथवा रूसी तुर्किस्तान था

कुछ विद्वानों के विचार में पामीर प्रदेश अथवा रूसी तुर्किस्तान आर्यों का आदि देश था। एडवर्ड मेयर ने बड़े तर्कपूर्ण ढङ्ग से यह सिद्ध किया है कि आर्य लोग यहाँ से ईरान की ओर गये। आर्यों का पूर्व से पश्चिम जाना सुगम है तथा कई जातियाँ इस मार्ग से जाती भी रही हैं। फिर ईरान से ये विभिन्न देशों को गये। डा० पी० गाइल्स

प्रश्न ५—आर्यों के मूल स्थान के विषय में आप क्या जानते हैं ? इस विषय में इतिहासकारों के मतों का उल्लेख कीजिए।

अथवा

आर्य कौन थे ? उनके आदि देश से सम्बन्धित विभिन्न मतों का विवेचन कीजिए। (१९६२)

भूमिका

आर्यों का मूल-स्थान कहाँ था ? यह एक अत्यन्त विवादग्रस्त प्रश्न है। अभी तक इस प्रश्न का कोई ऐसा सन्तोषजनक उत्तर नहीं दिया गया, जो सर्वमान्य हो। आर्यों के आदि-देश की खोज करने में विद्वानों ने विभिन्न साधनों का अवलम्बन किया है। उसी के आधार पर आर्यों के आदि-देश के सम्बन्ध में चार प्रधान सिद्धान्तों का जन्म हुआ है —

(१) योरोपीय सिद्धान्त (२) मध्य एशिया का सिद्धान्त (३) आर्कटिक प्रदेश का सिद्धान्त (४) भारतीय सिद्धान्त।

(१) आर्यों का आदि देश यूरोप था

बहुत से विद्वानों का मत है कि आर्य जिन्होंने भारत में प्रवेश किया योरोपीय आर्यों की एक शाखा थे। फारस, यूनान, इटली, जर्मनी, फ्रांस तथा इंगलैण्ड के निवासी इन्हीं की शाखायें तथा उपशाखायें हैं। सर्वप्रथम फिलिप्पों सैमेटी ने जो कि गोवा का एक सौदागर था पहली बार यह बतलाया कि यूरोप की भाषाओं तथा संस्कृति में एक साम्य है। इसके पश्चात् विलियम जोन्स ने एक लेख द्वारा इस मत का अच्छे ढंग से विवेचन किया। उन्होंने बताया कि मातृ, मेटर, मदर और पितृ, पेटर, फादर ये शब्द एक ही अर्थ में विभिन्न देशों में प्रयोग किये जाते हैं। इससे यह सिद्ध होता है कि इन भाषाओं के बोलने वाले लोग किसी समय अवश्य साथ-साथ रहे होंगे, बाद में इन लोगों में कुछ लोग विदेश में गये, जहाँ अन्य जातियों के सम्पर्क से उनकी भाषा में कुछ परिवर्तन हो गया है। कुछ लोगों ने इस बात का भी अन्वेषण किया है कि आर्य लोग यूरोप के किस देश में निवास करते थे।

(क) आर्यों का आदि देश "हंगरी" था—डा० गाइल्स का मत—

भाषा विज्ञान के आधार पर डा० पी० गाइल्स (Dr.P. Giles) ने यह निष्कर्ष निकाला है कि आर्य लोग गाय, बैल, भेंड़, घोड़ा, कुत्ता, सुअर, हिरन आदि से भली-भाँति परिचित थे। वे गेहूँ और जौ की खेती करते थे। इन सब बातों को ध्यान में रखकर यह कहा जा सकता है कि आर्य लोग ऐसे स्थान पर रहे होंगे जहाँ ये सब वस्तुयें पाई जायँ। ऐसा जान पड़ता है कि उनका मूल स्थान समशीतोष्ण कटि-बन्ध रहा होगा। समशीतोष्ण कटिबन्ध में हंगरी ही ऐसा देश है जिसमें ये सब बातें पाई जाती हैं। अतः आर्यों का मूल स्थान हंगरी ही होना चाहिये। यहाँ से आर्य लोग